SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

MAY 2005



६१ वें पाकट्योत्सव के प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री द्वारा कीर्तन-भक्ति के दर्शन और सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिए संतो द्वारा प्रसादी की वस्तु के अर्पण विधि ।

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद.

Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





सीडनी (ISSO ओस्ट्रेलीया) मंदिर में दर्शन देने हेतु
श्री हरिकृष्ण महाराज
तथा सभा में हरिभक्त भजन कीर्तन करते हुए ।





प.पू. बडे महाराजश्री के ६१वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर संत हरिभक्त समूह आरती उतारते हुए ।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ मई -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	बामरोली में श्री स्वामिनारायण मंदिर का इतिहास	५
४.	सप्तम पीठाधीश्वर की सेवा में सावधान रहना ही धर्म है	७
५.	परमेश्वर की कहानी	१०
६.	भक्ति के तंबूर से टपकता है भक्ति का रंग	१२
७.	सत्संग सुरभि : कचड़े में कुंदन का वास	१४
८.	महाराज सभी बालकों के	१६
९.	विद्यार्थियों की छुट्टी	१७
१०.	अक्षरधाम वर्णन	१९
११.	नियम, निश्चय और पक्ष	२०
१२.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अपने इष्टदेव का स्वस्प जैसा है वैसा ही यदि मुमुक्षु पहचान ले तो उन्हे इस संसार में कुछ करने के लिए शेष रहता ही नहीं है । वेद भी इसी बाद को प्रमाणित करते हैं । "ऐकेन विज्ञातेन सर्वं विज्ञातं भवति ।" एक परमेश्वर के स्वस्प का यथार्थ ज्ञान हो जाय तो जगत के सभी प्रकार के ज्ञान की स्फुरणा स्वयं हो जाती है । परमेश्वर के स्वस्प का ज्ञान मनुष्य को तब होता है जब अंत:करण शुद्ध सत्वगुण से युक्त होता है । जब तक राग-द्वेष अथवा मेरा-तेरा है तभी तक रजोगुण तमोगुण मिटता नहीं है । रज-तम को जब तक अंत:करण से सर्वथा निकाला न जाय तब तक शुद्ध सतोगुण अंत:करण में स्क नहीं सकता । वैदिकमंत्रोच्चार पूर्वक रजोगुण-तमोगुण को नासकरके शुद्ध सत्व को स्थापित करके उसी के रक्षार्थ उपनीत किया जाता है। जिस संस्कार को हम उपनयन कहते हैं । इस विशेष प्रकार के परमेश्वर के ज्ञान को प्राप्त किये हुए को उपनीत कहाजाता है । जनोई के संस्कार के बाद ही वैदिक ज्ञान या गायत्री मंत्र का अधिकार मिलता है । पश्चात् वेदाध्ययन में रत होता है । जिससे परमेश्वर के स्वस्प का यथार्थज्ञान संभव हो । ईसी प्रकार सोलह संस्कारों में उपनयन संस्कार का बडा महत्व है । समाज में भी विवाह प्रसंग की तरह ही उपनयन में सभी लोग सोत्साह उपनीत को अपनी भावना व्यक्त करने तथा भेंट सौगात देने, आशीर्वाद देने आनंद व्यक्त करने हेतु पधारते हैं । इस अवसर को मंगलमय बनाने के लिए नात रिश्तेदार, कुटुम्बी परिवार तथा अन्य हितेच्छुक शामिल होते हैं ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अप्रैल - २००५



6 श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।	10 संतदीक्षा विधि स्वहाथों से दिये । प.भ. गिरधरलाल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, नारायणपुरा ।	11 कोठम्बा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । बालासिनोर गाँव में प.भ. राकेशभाई एन. काढिया के यहाँ पदार्पण ।	
13 प.भ. किरीटभाई बकीरभाई पटेल के यहाँ पदार्पण लवारपुर (जि. गांधीनगर)	15 16 रोहीशाळा गाँव में (मूलीदेश ता. टांकारा) मंदिर के रजत जयंति महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।		17 साबलवाड (जि. साबरकांठा) ग्रुप सेवा सहकारी मंडल के रजय जयंती प्रसंग पर पदार्पण ।
18 श्रीहरि जयंति रानवमी, सर्वोपरि बालस्वरूप घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अभिषेक तथा प्राकट्योत्सव की आरती अपने हाथों से किये ।	19 कांकरिया (रामबाग) मंदिर में पाटोत्सव - अभिषेक स्वहाथों से किये ।	20 प.भ. अरविंदभाई लालजीभाई के "तुलसी ज्वेलर्स" का उद्घाटन अपने हाथों से किये, वस्त्रापुर। प.भ. पूनमभाई मगनभाई पटेल के यहाँ पदार्पण - एलिसब्रिज।	21 हळवद (मूलीदेश - जि. सुरेन्द्रनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर की खातविधि स्वहाथों से किये ।
22 श्री स्वामिनारायण मंदिर गुजरवदी (ता. ध्रांगध्रा, मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।	23 वरिया प्रजापति मिलन मंदिर में भागवत पारायण प्रसंग पर पदार्पण - ओढव ।	24 श्री स्वामिनारायण कांकरिया मास्तियज्ञ के प्रसंग पर पदार्पण ।	25 श्री स्वामिनारायण मंदिर लेई (इडरदेश) पाटोत्सव तथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण, वापस आते समय प.भ. मुकेशभाई चौधरी के यहाँ पदार्पण - गान्धीनगर । रात्रि में मांडवी (कच्छ) पधारे ।
26 श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) में पाटोत्सव अभिषेक स्वहाथों से किये ।	27 प.पू. बडे महाराजश्री का ६१वाँ प्राकट्यत्सव अपनी अध्यक्षता में धूमधाम से संपन्न किये ।	29 30 भुज (कच्छ) रामपर वेकरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदार्पण ।	

सभी सत्संगी को जरुरी सूचना

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्पष्टता पूर्वक अपने सभी आश्रितो को आज्ञा की है की अपनी आमदनी का दशवा भाग अपने देश विभाग के आधार पर अपने देश विभाग के देव को अर्पण करना चाहिए ।

केवल संस्थाये, गुरुकुल या मंदिरो का निर्माण तथा किसी भी स्थान में दान करना हो तो धर्मादा में कमी करके दान नही देना चाहिए । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के आश्रितोको श्री नरनारायणदेव के कोठार में ही अपना धर्मादा (रुपया, अनाज इत्यादि) जमा कर प्राप्ती रशीद जरुर से प्राप्त करले ।

सर्वावतारी श्रीहरि की ईच्छा से अपना संप्रदाय देश विदेश में बहुत विस्तृत और व्यापक बनता जा रहा है । दाताओ कई बार कहाँ दान देना वो पता नही रहेता इसलिए दान का प्रवाह दूसरी संस्था की तरफ मुड गया है । इसलिए दाताओ को सूचन है की दान के लिए योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से प्राप्त कर योग्य जरुरत वाले मंदिर, संस्था, गुरुकुल इत्यादि को मिले ।

बामरोली में श्री स्वामिनारायण मंदिर का इतिहास

प.पू. आदि आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज अहमदाबाद से छपैया जारहे थे तब संत, पार्षद नया हाथीधोडो की सवारी के साथ बड़ी-बड़ी पहाडियों के बीच चंबल नदी मध्यप्रदेश के छोटे से विस्तार से गुजरहे थे । उसी रास्ते से विशाल सेना के साथ जा रही वहाँ की प्रजा को तीरकमान तथा बरछिओं के साथ घूमते देखा । संध्या काळ था । अंधेरा होने के कारण आगे जाने का मार्ग पता चल नहीं पा रहा था । और यहां हथियारधारी लोगो को देखकर प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज को कुछ अगम्य लगा । परंतु यह सब लोग आचार्य महाराजश्री का मुखारविंद देखकर बहुत प्रभावित हो गए । और मनमें विचार करने लगे की यह कोई दिव्य पुरुष भगवान के पुत्र अथवा स्वयं भगवान ही है । ऐसा मनोमन सोचते वे सभी उनके पास आए और पू. महाराजश्री के चरणों को स्पर्श करके कहने लगे कि हम सब बारडोली गाँव के रहवासी हैं । आपके दर्शन से हम सभी के हृदय को शांति हुई है । आप हमारे वेष को देखकर थोडा भी संकोच मत कीजिए । आज हमको ऐसा लगता है कि हमारा भाग्य खुल गया । प.पू. महाराजश्री सभी के अंतर भाव और उनकी श्रद्धा देखकर वहाँ रात्रि निवास किया । और सब को पूज्य अयोध्याप्रसाददजी महाराजश्री ने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, सहित पूर्ण पुरूषोत्तम सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के भगवत भक्ति की अलौकिक बातें की ।



सभी ग्रामजन ऐसी भक्तिरसमें तल्लीन हो गऐ की समय का किसी को भी ज्ञान न रहा । सभी लोग स्वयं को इस घटना के कारण धन्य मानने लगे । इसलिए सभी गांव में सें अपने घर से घी, दहीं, दूध आदिक लाकर खूब सेवा की । इस तरह यहाँ के प्रेमी भक्तो को देखकर प.पू. महाराजश्री चार दिन तक वहाँ रुक गए । और इस तरह उन्होंने सभी के साथ अहमदाबाद आने का निर्णय ले लिया । तब सभी की आंखो में से आंसु बहने लगे । और वहाँ अधिक समय तक रुकने की प्रार्थना की । परंतु प.पू. महाराजश्री ने सभी को प्यार से समझाया कि हमें रोज हजारों-लांखो हरिभक्तों को इसीतरह गाँव-गाँव जाकर दर्शन सुख प्रदान करना है । जिस कारण हमारा कही भी अधिक रुकना ठीक नहीं है । हम आप सभी को हमारी पूजा की मूर्ति देतें है जिस की आपको नित्य पूजा करनी है । उसके बाद ग्रामजनोने सुंदर स्थान पर मूर्ति स्थापित की और सेवा पूजा करने लगें । यहाँ से विदाई लेते हुए प.पू. महाराजश्रीने गांव के सभी भाइओं को कहा कि आपके घरसे दहीं-दूध, लेकर आइये । जिसको बडे से कळशमें भरकर भक्तो से उसे उठवाकर अपने हाथ से स्पर्श करके श्री स्वामिनारायण महामंत्र बोलकर समग्र गांव में दूध की धारा बहा कर ऐसा आशीर्वाद प्रदान किया कि पापी हो या पुण्यशाली फिर भी उसे यमराज का बुलावा नहीं आएगा । और वह भगवान के धाम कों प्राप्त होगा । यह वचन आज घोर कलयुग में भी सिद्ध हुआ दिखाई पडता है । क्योंकि ..... किसी का भी देहत्याग होनेवाला होता है उसे दो दिन पहले आचार्य महाराजश्री का दर्शन होता हैं । उसके देहका त्याग होता हैं । समयान्तर में प.पू. आचार्यश्री

केशवप्रसादजी महाराजश्री ने स.गु. पुराणी स्वामी नंदकिशोरदासजी को यहाँ शिखरबंध मंदिर बनवाने की आज्ञा दी परंतु गाँव की परिस्थिति देखते हुए स्वामीजी को काम कठिन लगा । बे बहुत व्यथित हो गए और प.पू. महाराजश्री को प्रार्थना की । इस तरह प.पू. महाराजश्री की प्रेरणा से तथा कृपा से ही सिंधिया कुल के ग्वालियर के राजा का संपर्क अनायास ही बामरोली गांव में पू. स्वामी से हुआ । और स्वामी के तेजस्वी आभा देखकर अपना वृत्तांत सुनाया । उसके बाद स्वामी ने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य और धर्मकुल महात्म्य सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महामंत्र जाप जपने को कहकर कंठी पहनाई । और श्रीजी महाराजश्रीकी कृपा से थोडे समय के बाद राजा के यहाँ पुत्र प्राप्ति हुई । इसलिए राजाने बामरोली में श्री नरनारायण देव पीठस्थान के भव्य मंदिर के निर्माण में वहुत सहयोग दिया । मंदिर का काम समाप्त होते ही प.पू.ध.धू. आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्री ने प्राण प्रतिष्ठा करके बामरोली गाँव के भक्तों का संकल्प पूर्ण किया । ऐसे मंदिर में भगवान के दर्शन हेतु एकबार वर्षमें अवश्य जाना चाहिए ।

दर्शन करने के लिए जाने के मार्ग की माहिती :

बायपास वाहन लेकर जाना हो तो अहमदाबाद से जयपुर वहाँ से आग्रा वहाँ से मुंबई आग्रा हाइवे पर मोरेना तक पहुंचना । (आग्रा से ११० किलो मीटर होता है) मोरेना से हाईवे पर टेकरी हनुमानजी मंदिर आना है । वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोर्ड है । वहाँसे बिचोला के तरफ (ओर) जाना । बिचोला से तीन कि.मी. आगे श्री स्वामिनारायण मंदिर का बोर्ड आताहै । वहाँसे सिर्फ ५ किलोमीटर बामरोली श्री स्वामिनारायण मंदिर है ।

दूसरा रास्ता : अहमदाबाद से इन्दौर वहाँसे ५५ कि.मी. मुंबई आग्रा हाइवे पर ग्वालियर पहुंचकर वहाँसे टेकरी मोटा हनुमानजी मंदिर से माजमपुर चोकी से रिठोडा दश कि.मी. है । वहाँ से बामरोली आ सकते है । (जो ५ कि.मी. होता है) अगर छपैंया दर्शन करके आने के लिए छपेंया से कानपुर और वहाँ से लखनौं से इटावा से भील हाईवे से माजमपुर चौकडी से बीस कि.मी. रिठोडा बिचोला के वीच में बामरोली आता है ।

लि.

श्री स्वामिनारायण मंदिर बामरोली

फोन पी.पी. ०७५३२-२४२२८५

महंत पुराणी स्वामी

लक्ष्मीनारायणदासजी

तथा चैतन्य स्वामी

निवृत्ति में प्रवृत्ति

समग्र सत्संग जानता है कि अपने निवृत्त प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अपने निवृत्तिकाल में सम्पूर्ण समय अपने शुभ संकल्प के समान संप्रदाय का अद्वितीय आयोजन "श्री स्वामिनारायण म्यूजियम" (नूतन निर्माणाधीन) के निर्माण तथा संचालन में व्यस्त रहेंगे । यह आयोजन जल्दी से प्रगति के मार्ग पर है ।

जिससे अब प.पू. बडे महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के स्थल पर अपनी आफिस में विराजमान होंगे । प्रात : ९-०० से ११-०० बजे तक वहाँ ही दर्शन करने का लाभ मिल सकता है।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम

टर्फ स्कूल के सामने, ए.इ.सी. नारायणपुरा के पीछे,

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४१९५९७ टीले फेक्स : २७४९९५९७

सप्तम पीठाधीश्वर की सेवा में सावधान रहना ही धर्म है

- पटेल गोरधनभाई शंकरलाल (सोजा)

जानामि धर्मं नच में प्रवृत्तिः
जनाम्यधर्मं नच में निवृत्ति : ।
धर्ममधर्मं यच्च ज्ञान निष्ठं, तत्वयं
जानन् सच एव मुक्तः ॥

श्रीहरि के सत्संग में रहते हुए सत्संग का सही सुख क्यों नहीं मिलता ? इसका कारण है - अपना मन स्थिर नही हैं, बुद्धि तर्क युक्त हो गयी है। चित्त धन-दारा-पुत्र, परिवार, सत्ता, पद, अधिकार की लालसा में लिपट गया है । समय बदलाया है कि हम बदलाये हैं । इस बात को समझने की किसी को फुरसत नहीं हैं। परिणाम स्वस्म कितने धार्मिक कहलाने वाले भक्त भी आज दुःखी हैं । इसका कारण है - अन्धश्रद्धा

ज्ञानदूर कुछ, क्रिया भिन्न है, इच्छा
पूरी हो क्यों मन की ।
एक दूसरे से न मिल सके, यह
विडम्वना है जीवन की ॥

इस जीवन के विघ्न को दूर करने हेतु स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

संत कृपा से सुख पामिए, संत कृपा
से उपजे ज्ञान ।
निष्कुलानंद संत कृपा करे, तो आपे
अविचल दान ॥ संत कृपा - ॥
संतकृपा से सद्गुण, संतकृपा विना
साधुता, कहोने पामिया कोण ॥

इस लिए मानवजीवन की सार्थकता को पूर्ण करने में तथा इहलौकिक - पारलौकिक जीवन में परम पद की प्राप्ति करने में सबसे बड़ा विघ्न है ज्ञान- क्रिया दोनो के समन्वय का अभाव । संत कबीरने लिखा है -

कथनी तजि करनी करै, दुःख काहे को होय । सत्य में ही परमार्थ की वृत्ति जागती है । शिक्षापत्री तथा वचनामृत के अनुसार सुखी होना हो तो श्रीहरि की आज्ञा में रहे -

हरि की मरजाद मां नित्य रहे रे,
धर्म नियम वाले सगी रीते रे ।
लोपे नहीं आज्ञा लगार रे, चालु
प्रभ वचन अनुसार रे ।
होय आज्ञा करी अंग रे, कदी न
करे आज्ञानुं भंग रे ।
एवा नी थाय कल्याण रे, कही
बीजानी सांभाण सुजान रे ।
मलय प्रभुना मलयज कहिये रे,
तेवी कहो कल्याण केम लहिये रे ।
माटे हरि-हरिजन वेणु रे, करशे
कल्याणनुं जोव गोणुं रे ।
आप स्वास्थ्य सौ सार सेर रे,
हरिना थई पर घर मां हशे रे ।
माटे तोडी तपसावुं वेले रे,
कल्याण प्रभु के प्रभुं ने मळेले रे ।
ते विना कल्याण काचु रे,
कहे निष्कुलानंद ये साचु रे ॥
कल्याण निर्णय ॥

अर्थात्, कल्याण के दाता, सुख प्रदाता, धर्मरक्षक, श्रीजी महाराज है - बाल मुकुंद कविने कहा है - कहां छपैया । कहां कढडा ?

कहाँ अहमदाबाद वडताल ?
चरण कमल श्रीहरिये धरिया,
करी गुर्जरी न्याल,
आसुरी तत्वो संतार्या, धर्मकुल प्रस्थाप्युं.... एवा

परब्रह्म परमात्माश्री सहजानंद स्वामी को सहज आनंद की प्राप्ति के लिये साष्टांग प्रणाम के साथ सभी सत्संगी श्रीहरि का वचनामृत शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करें - मुक्तानंद स्वामी ने लिखा है । धर्मकुल का माहात्म्य अपारजी,

श्री मुख वर्णव्यु वारंवारजी, माटे
धर्मकुल जेवु कोयजी ।
अति बडभागी सेवे सोयजी ।
श्रीजी महाराज ने स्वयं कहा है -
अति पुण्यवंत देहजी, सौना गुरु
अमे कीधा ते हजी
माटे अमारा सेवक सर्वेजी,
धर्मवंश सेवो तजी गर्वजी ।
धर्मकुल ने सेववुं राखी अचल उर
टेक ।
धर्म अधर्म वंश नो जाणवों सर्व
विवेक ।
धर्म अधर्म सर्ग मां छे, प्रगट भेद
अनंत ।

तेने जे एक करी जाणशे, ते
विमुख कुमति जंत ॥

धर्माख्यान स.गु. मुक्तानंद स्वामी

धर्मकुल में प्रकट ब्रह्म श्री स्वामिनारायण भगवान का जैसा माहात्म्य है वैसा ही जानकर प्रार्थना करते है -

आदौ प्रेमती वृषांगजननं, सन्नैक तीर्थाटनं, दुष्कर्मोपशमंच साधु शरणं सद्धर्म संस्थापनम् ।

हिंसा वर्जित भूरियज्ञ करणं मूर्तिप्रतिष्ठांपनं, आर्यस्थापन मक्षराख्यगमनं. सत्संगिजीवनम् ॥१॥

ऐसे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को अपना आचार्यपद देकर जगत के जीवों को वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश करने की अनाशक्ति भावना दिखाई है ऐसे प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। आज घर घर गुरु होकर, घर घर धर्म की गद्दी बनाने वाले छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, मान, मात्सर्य आदि अधर्म के गुलाम होकर मान-प्रतिष्ठा तथा अपने अंह को पुष्ट करने के लिए स.गु. मुक्तानंद के शब्दों में *गुरु थई नरनारी ने आपे, असत् उपदेश धर्म से भ्रष्ट करे सवने तेनोत्रास न लेश, भवतारण श्रीकृष्ण की भक्ति की बाडे एह*। इन सभी से बचने के लिए श्रीहरिने वचनामृत में कहे अनुसार मन-बुद्धि तथा चित्त में सदा अंकित रहे ऐसा सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए। जैसा श्रीहरिका सनातन सत्संग है वैसा ही दृढता से पालन करिये। आत्मा अक्षर भगवान की शरीर है । तथा भगवान के अधीन एवं पर तंत्र है । ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान सदा समर्थ हैं । दीव्यमूर्ति के समान है । वचनामृत ६४ पुरुषोत्तमनारायण अपने ऐश्वर्य से सर्वोपरि व्यवहार करते हैं । जो उनको अक्षरा दिक मुक्त समान कहते हैं । वे दुष्ट मतिवाले हैं और पापी हैं। ऐसे लोगों का दर्शन भी नहीं करना चाहिए । (वचनामृत लोया-१३) पुरुषोत्तमनारायण की मूर्ति के साथ प्रेम की प्रवृत्ति के अलावा कोई अक्षरधाम को प्राप्त नहीं कर सकता है ।

इसलिये महाराज के जैसा किसी अन्य के साथ सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए । (स.गु. गोपालानंद स्वामी की बातों १ वार्ता ११) श्रीहरि के वचनामृत तथा नंद संतो की वाणी को ग्रहण करके सत्संग में रहना चाहिए । तभी उपासना शुद्ध कही जायेगी । जैसाकि -

स कृष्णः परंब्रह्म भगवान
पुरुषोत्तम ।
उपास्य इष्ट देवोनः सर्वाविर्भाव
कारणम् । (श्लोक १०८)

ईश्वर कौन ? तो पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री कृष्ण अपने इष्टदेव हैं । इन्ही की उपासना करनी चाहिए । यह स्पष्ट करता है कि एकमात्र सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने श्रीकृष्ण की उपासना की ही आज्ञा की है । सेवकके साथ भगवान की उपासना करने की बात वचनामृतों में नहीं देखने को मिलती हैं । शि.प. श्लोक ११५ श्रीहरिने स्पष्ट कहा है -

कृष्ण स्तदवताराश्च
धेयास्तत्प्रतिमापिच ।
न तुजीवानृदेवाद्या
भक्ताबलविदोऽपिच ॥

इस प्रकार श्री कृष्ण के अवतार तथा उनकी प्रतिमा भी ध्यान करने के योग्य है ।

यदि श्रीकृष्ण का भक्त हो और ब्रह्मवेता हो गया हो तो भी उसका ध्यान करना योग्य नहीं है । शि.प. श्लो. ११३ में श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति करने की आज्ञा की गयी है । स्वामी सेवक यह युगल उपासना करना ठीक नहीं, लेकिन श्रीहरि का सेवक बनकर श्रीहरि की उपासना करनी चाहिए । सेवक के विषय में स.गु. मुक्तानंद स्वामीने लिखा है -

सांभण बेनी हरि रीझयानी रीतडी,
मोहन वरने मान संगाथे वेर जो,
साधन सर्वे मान बगाडे पण विशे,
जेम भण्युं वय शाकरमां अही झेर
जो ॥

इस प्रकार "स्व" को भूलकर निर्मानी होकर रामानंद स्वामी के पट्ट शिष्य थे । सत्संग में बड़े थे । श्रीहरि मांगरोल में समाधि प्रकरण चलाये । उस समय मेधपुर में श्रीहरि जब मिले तो शिकायत करते हुए कहा कि "महाराज दियो पाखंड मेली सतसंगमां ना थावु फेली" तब महाराज इतने में संतदासजी को समाधि लग गयी । मुक्तानंद ने नाडी, प्राण, श्वास का स्पर्श किया तो कुछ ख्याल नहीं आया । स्वयं संत दास समाधि में से जगकर कहने

लगे कि "मैं अक्षरधाम में गया था और रामानंद स्वामी को उद्धवजी के रूप में इन सहजानंद स्वामी की सेवा में देखा । यह सुनकर द्विधा में पड़ गये। बाद में श्रीहरि के साथ स्नान करने गये । वहाँ सौच करने दूर तक चले गये । जब वापस आ रहे थे तब रामानंद स्वामी का दर्शन हुआ और हाथ जोड़कर खड़े रहे । तब रामानंद स्वामी ने कहा "आप इतने थोड़े समय में मेरी बात भूल गये, ये सहजानंद स्वामी साक्षात् सर्ववतारी परमात्मा हैं । और मैं उद्धवजी का अवतार हूँ । ये अपने सामर्थ्य को छिपाकर रहते हैं । यह समाधि वे अपने संकल्प मात्र से कराते हैं ।

इन्ही के संकल्प से अनंत कोटि ब्रह्मांडकी उत्पति, स्थिती, लय होती है प्रत्येक जीव का प्राण ईन्ही के हाथ में है । इसलिए शंका को दूर करके इन्हीं का भजन करो । इसी में आपका उद्धार है । इस प्रकार रामानंद स्वामी की बातों को सुनकर सर्वावतारी परब्रह्म परमात्मा श्री सहजानंद को पहचान गये और आनंद मग्न हो गये । स्वामिनारायण के नाम रटन करने लगे । श्रीहरि को साष्टांग दंडवत् करने लगे । वहाँ श्रीहरि की आरती का आर्तनाद वाणी द्वारा होने लगा ।

जय सद्गुरु स्वामी, सहजानंद दयालु बलवंत बहुनामी ।

समग्र साधुगुण से सम्पन्न, स.गु. मुक्तानंद स्वामी थे जिनके भीतर राग, द्वैष, ईर्ष्यादिक दोष नहीं था । परिणाम स्वरूप गुरुमद की गादी को छोड़कर संत के रूप में प्रेरणादायक संदेश सभी को दिये ।

हे हरिभक्तो ? श्रीजी महाराजकी आज्ञा में (शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण) जीव का रहस्य समझना चाहिए । हमतो पतित पावन श्रीजी महाराज के धर्मकुल के आश्रित है, ऐसा विचार कर महाराजकी आज्ञा में व्यवहार करेंगे तो ही प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी की प्रसन्नता के भागी बनेंगे । भगवान श्री नरनारायणदेव की प्रसन्नता मिलती रहेगी । तभी अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है । इसलिए सेवा भक्ति अर्थात् मन-कर्म-वचन से गुरु भक्ति करना ही श्रेयकर है । भगवान दृढ भक्ति, निश्चयवाले भक्त से वश में हो जाते हैं । इसलिये सभी सत्संगी सत्संग के रहस्य को समझकर सावधान होकर श्रीहरिका ध्यान तथा श्री नरनारायणदेव में निष्ठा रखें तो निश्चित ही अपना कल्याण सम्भव है ।

षष्टि पूर्ति तथा श्री स्वामिनारायण म्युझियम में सेवार्थ भेंट की जानकारी के लिए

प.पू. आचार्य महाराजश्री की षष्ठि पूर्ति महोत्सव में तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियममें बहुत से सेवा भावी हरिभक्तों ने सेवार्थ भेंट को नोंट कराये थे, परंतु संयोग वशात् बहुत से सेवा करनेवालों की सेवार्थ भेंट आना बाकी है । इसी प्रकार श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भी बहुत से हरिभक्तों की सेवा नोंट की गयी थी, जबकि म्युजियम का कार्य बहुत ही तीव्र गति से गतिमान है, तो जो सेवा का लाभ लेना चाहते थे और जिन्होंने अपनी सेवा करने की दिलाशा दी थी वे अपनी सेवा की रकम अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के नाम से नगद, चेक या ड्राफ्ट भेंज सकते हैं, या प्रत्यक्ष रूप से जमाकराकर पहुंच प्राप्त कर सकते है ।

महंत स्वामी, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान अहमदाबाद की मालिकी का

श्री सहजानंद गुरुकुळ असारवा में

प्रवेश हेतु

अहमदाबाद मंदिर की तरफ से अपने आचार्य महाराजश्री का प्राचीन निवास स्थान जो श्रीजी महाराज के चरणों से अंकित है ऐसी प्रसादी की भूमि पर श्री स्वामिनारायण वाड़ी असारवा गुरुकुल में कक्षा १ से १० तक अपनी शाला में अभ्यास हेतु प्रवेश दिया जाता है । कक्षा ५ से १० तक रहने खाने की सुन्दर व्यवस्था शिक्षण के साथ उपलब्ध है । संस्कार का सिंचन उत्तम ढंग से किया जाता है । जिससे SSC बोर्ड की परीक्षा में बालक के अच्छे प्रतिशत से उत्तीर्ण होते हैं । प्रतिशत के अनुसार सभी को पोसाय इतनी ही फीस लेकर एडमीशन दिया जाता है । सर्वप्रथम आप अपने बालक का एडमीशन करा सकते हैं ।

ली. संचालकश्री श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा अम. १६

परमेश्वर की कहानी

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

श्री गढडा मध्य के नवमें वनचामृत में श्रीजी महाराजने परमेश्वर की बात की है "संवत १८७८ के श्रावण सुद चर्तुदशी के दिन और श्रीजी महाराज के हाथ में रखी हैं ।"

मुक्तानंद स्वामी कहते थे, "कीर्तन बोलिए" परंतु श्रीजी महाराजने कहा, "चलो परमेश्वर की कहानी सुनते है।"

श्रीहरि के श्री मुख से यह कहानी सुनाते है । बात कोई बहुत लंबी नहीं है । छोटी सी हैं । श्रीहरि ने कहा, "किसी भी प्रकार से भगवान के वचनो का लोप होता हो तो चिंता नही परंतु भगवान के स्वस्म का द्रोह नहीं होना चाहिए । जो समझदार हो उसे भगवान के वचन के प्रमाण से अवश्य ही रहना चाहिए । परंतु हंमेशा भगवान की मूर्ति में विश्वास पूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिए । इस मूर्ति का बल ही क्या ? तो श्रीहरि कहते हैं "सर्वोपरि को सदैव दिव्य साकार मूर्ति और सर्व अवतार के अवतारी जैसा जो भगवान का स्वस्म है वही हमें प्राप्त हुआ है ।"

पुस्त्रोत्तम भगवान के एक वचन का वाक्य इतना अद्‌भुत और अनुपम है कि जो इस महिमा को समझ जाये, इसके बाद कुछ करने को बाकी ही नहीं रहा है । उसके प्रति शब्द महत्व के हैं ।



यहाँ भगवान का जो स्वस्म है वह यथार्थपूर्वक बताया है । और "वह जो स्वस्म हैं वही मुझे प्राप्त हुआ हैं।" एकांतिक भक्त और चुस्त सत्संगी बनने की यह दो बाते बहुत अच्छी तरह से प्रस्तुत की गई हैं । भगवान कहते हैं कि मेरा द्वारा इस प्रकार समझाई हुई भगवत निष्ठा दृढ नहीं होतो पुस्त्रोत्तम भगवान के धाम में नहीं जा पाएगे । हाँ, ब्रह्मांड के या दूसरे देवता के लोक में जरुर जा सकते हैं । परंतु हमारे धाम को प्राप्त करनाहो तो स्वयं की साक्षात मिला हो ऐसा भगवान का स्वस्म उसे सदा दिव्य साकार मूर्ति को सर्व अवतार का अवतारी होने का कारण समझना चाहिए । और ऐसा न समझकर उसे निराकार समझकर उसे दूसरे अवतार जैसा तो उसका अर्थ द्रोह करना होता है ।"

यह तो साक्षात पुस्त्रोत्तम नारायण स्वस्म की बात है । अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति का स्वस्म कैसा है, तो कहते है १. सर्वोपरि २. सदा दिव्य साकार मूर्ति और दूसरा सभी अवतारी के कारण स्म हो ऐसे अवतारी, यह सर्व भगवान के सभी अवतारो का कारण है । पुस्त्रोत्तम भगवान अर्थात् श्री स्वामिनारायण ही सभी अवतारो के अवतारी है ।

अर्जुन जी को भगवत स्वस्म के बल की और उनके वचन की दृढता थी । और युधिष्ठिर राजा को शास्त्र के वचन में दृढता थी । "सर्व धर्म को त्याग कर अपने मन से माने हुए भ्रम मात्र को त्याग करके तुम मात्र मेरी ही शरण में आओ । एक मात्र मेरे वचन का अनुशरण करके युद्ध करो। मैं तुम्हे सर्व पाप से मुक्त करुंगा ।" श्रीकृष्ण के इन वचनों को मान कर अर्जुनजीने युद्ध किया । अनेक जीवों का नाश, अनंत दोष होने पर भी लेश मात्र मन में से दृढता कम न हुई,

क्योंकि उन्हे भगवान के आश्रय पर विश्वास था । इस तरफ युद्धिष्ठिर ने कोई पाप किया न था । फिर भी शास्त्र के वचन में विश्वास था । परंतु मन में शोक हुआ कि "मेरा अब किसी प्रकार से भी कल्याण नहीं हो सकता ।" श्रीमद्भगवद में भी वही बात प्रधानस्म से समझाई गई है कि "श्रुति स्मृति के धर्म को त्याग करना पडे तो उसकी कोई चिंता नही परंतु भगवान के आश्रय को नहीं त्यागना चाहिए ।"

श्रीहरि लौटेंगे तब समझाऐगे कि इस बात को समझने से धर्म गलत नहीं होता परंतु देश, काल, क्रिया, संग, मंत्र, शास्त्र, उपदेश और देवता इनमें से अगर कभी अशुभ का योग हो और कोई विघ्न आ जाए तो भी भगवान के स्वस्म में निष्ठा दृढ हो गई होतो कल्याण के मार्ग में कोई बाधा नहीं आएगी । क्योंकि अशुभ योग से कदाचित सत्संग में से बाहर निकल जाना हो तो भी भगवान की मूर्ति में विश्वास अत्याधिक होगा तो देह छोडकर अंत में भगवान का जो अक्षरधाम हैं उसे प्राप्त हो ही जाएगा । और भगवद स्वस्म की निष्ठा में अल्प कमी भी होगी तो धर्म में से छूटजाने की भीती उसके मन में रहेगी कि जैसे बस अब में नर्क में ही जाऊँगा ।

यहाँ एक दूसरी सूक्ष्म बात भी दृढ स्म से करनी है कि धर्मवंश के आचार्य द्वाराप्राप्त हुई मूर्ति साक्षात पुस्योत्तम नारायण का ही स्वस्म हैं । गढडा मध्य के तेरहवे वचनामृत में श्रीहरि भगवान का द्विभुज दिव्य साकार स्वस्म का वर्णन किया हैं । वही स्वस्म अक्षरधाम में नित्य बिराजमान हैं । वही स्वस्म श्रीजी महाराज का हैं । वही स्वस्म मुझे धर्मवंश के आचार्यश्रीने दिया हैं । इसलिए अंत में मुख्य वचन, "सर्वोपरि सदा दिव्य साकार मूर्ति और सर्व अवतार के अवतारी जैसा जो भगवान का स्वस्म हैं वही मुझे प्राप्त हुआ हैं ।" बस इसी स्वस्म में दृढता करनी हैं ।

संक्षिप्त में हमारे घर में बिराजमान जो स्वस्म हैं वही श्री पुस्योत्तम नारायण हैं जो अक्षरधाम में नित्य बिराजमान रहते हैं । यह दिव्य वार्ता समझने के बाद श्रीजी महाराज जो-जो उपमा देते हैं । वह सभी, "परमेश्वर की वार्ता" को अति दिव्य बना देती हैं । १. ऐसी वार्ता कभी सुनी नहीं है और कभी सुन भी नहीं सकेंगे । २. यह कहानी तो, "न भूतो न भविष्यति जैसी है । ३. अति छोटी कहानी हैं परंतु अतिशय स्थूल बुद्धि वाला हो तो भी उसे समझ में आ जाएगी । ४. यह तो अतिशय मूर्तिमान कहानी हैं । ५. यह कहानी समझकर अति दृढ भगवान का आश्रय करना चाहिए । इसी मत में सार ही सार हैं ।

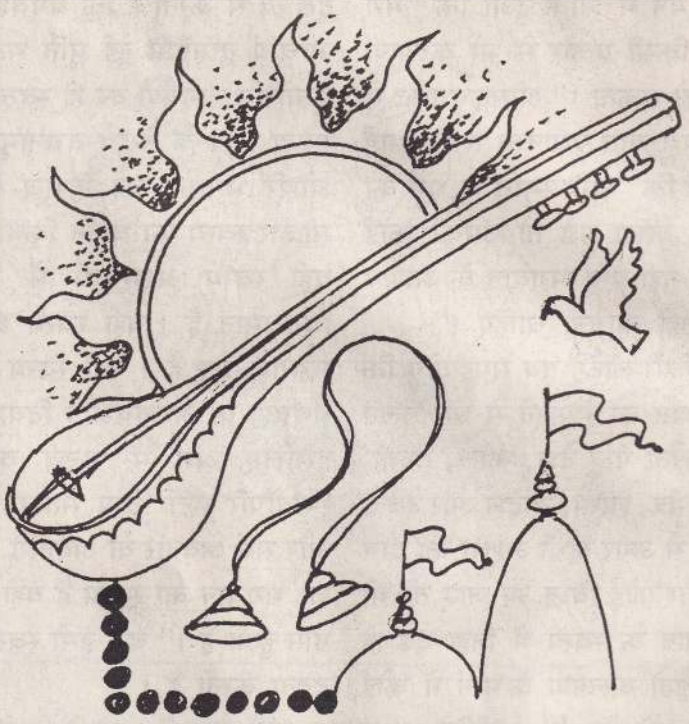
गृह त्याग करते समय श्री घनश्याम महा प्रभु ने जो चार बोध की बाते अपने साथ जीवन भ रखी वही सभी शास्त्रों का निचोड स्म, "सार मे अति सार" ऐसी यह "परमेश्वर की कहानी" परमेश्व श्रीहरिने स्वयं ही समझाई हैं । औ अति दृढ करके अंतर में उतारनी चाहिए यही एकांतिक भक्त औ चुस्त सत्संगी के लक्षण हैं । क्योंकि विश्वास करके प्रीति के साथ भगवान पुस्योत्तम नारायण की कहानी सुनने से मन स्थिर हो जात हैं और निर्विषयी हो जाता हैं इसके अलावा दूसरा कोई साधन नहीं हैं । (का.१२)

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरुकिए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- स्मये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती

भक्ति के तंबूर से टपकता है भक्ति का रंग

- प्रो. महादेवभाई धोरियाणी (राजकोट)



सच्चे भक्त की कथनी एवं करनी, एक होती है । श्री जवेरचंद मेघाणी की तरह कंठ की मधुरता तथा पांडित्य का समन्वय भक्तों में कम मिलता है। ''भक्तों के तंबूर से टपकता'' यह भक्तों में कम मिलता है । ''भक्तों के तंबूर से टपकता'' यह भगक्ति का रंग त्याग, तपस्या, प्रभु भक्ति, वैराग्य इत्यादि का द्योतक है । यर रंग आज की नयी दुनियां में अलौकिक स्वप्न जैसा है । मुक्ति की यशोगाथा में यह भक्ति का रंग जीवन को सार्थक बना देता है । भक्त कवियों के भजन में ज्ञानऔर वैराग्य बिखरे हुए हैं, जो हृदय को झंकृत करते हैं । पुलकित करते हैं । मन को नचाते है । भाव की भरती में दूर ले जाकर तृप्त करते हैं ।

भगवान का भजन करने वाले ज्ञानी भक्तको भगवान ने गीता में अपना 'आत्मा' कहाँ हैं । भक्त जब नम्रता धारण करता हैं तब उसकी भक्ति का प्रभाव बहुत ही ज्यादा हो जाता हैं । प्रभु को विनम्र व्यक्ति ही प्यारा लगता हैं । नम्रता महान सिद्धि हैं, नम्रता में महानता और अभिमान में अल्पता निरतंर निवसा करती हैं । विनय के आसन बिना ज्ञान पर बैठना नहीं चाहिए । वाणी, विचार, वर्तन, व्यवहार - यह चार विलक्षण व्यकितत्व के महत्व के पाये हैं । यह हंमेशा परिवर्तनशील होते हैं । परंतु यह चारों की एकता का साथ दे वह प्रखर ज्ञानी महात्मा पुरुष बन जाता हैं।

श्रद्धा, सुश्रूषा और विश्वास बिना किसी भी प्रकार भक्ति का रहस्य समझना और अनुभूति करना अशक्य हैं । भक्त प्रभु का प्रेमी हैं । भक्त प्रभु का दास भी हैं । कई भक्तों ने भारत की भूमि पर जन्म लेकर इस भूमि को और इस संस्कृति को भव्यता प्रदान की हैं । अन्य लोगो के आंखो से नीकलते आंसुओं को पोंछना भी भक्ति का एक प्रकार हैं । जनसेवा ही देश की सेवा हैं । प्रभु की सेवा हैं । मानवजीवन का अंतिम (चरम) लक्ष्य भगवत् प्राप्ति करना हैं । विद्वान की धन विद्या हैं, संसारी का धन स्वार्थ हैं, ज्ञानीका धन ज्ञान है, कलाकार का धन कला और भगवान के भक्त का धन है उसका भगवान । भगवान की भक्ति करने के लिए शास्त्रका अभ्यास होना जरुरी नहीं हैं । परंतु जरुरी हैं, तन,

मन मे से निकलते विकार के त्याग की ।

सृष्टि के जन्मकाल, से ही मानवजाति ने कई भक्तो का सर्जन करके वसुंधरा (पृथ्वी) को दिया हैं। साधु और भक्त ही प्रजा की सबसे बड़ी संपत्ति है । खुद का भोजन भी कोई मांगे तो उसे देना साधुऔर भक्त का संस्कार हैं ।

"होठ पर हरिनाम अने हाथ मा काम,
तेवा भक्तों पर प्रसन्न थाय श्रीराम ।"

जिस इन्सान को भक्ति का नसा हो जाता हैं, उसका जीवन सिद्ध हो जाता हैं । भक्ति में जिसको आनंद मिलता हैं उसको मुक्ति का आनंद तुच्छ लगता हैं । भागने का बंद हो जाता हैं और अर्पण करने का मन करता हैं । तब समझ लेना कि भक्ति का प्रारंभ हुआ हैं । भक्ति के आधार बिना ज्ञानी अथवा पंडित भी भगवान की प्राप्ति नहीं कर शकते ।

जिसका मन शबरी की तरह निर्मल होता हैं उसको प्रभु के सामने से मिलने आते हैं । भक्ति का मार्ग पलायनवाद का मार्ग नहीं हैं, यह सच्चे शूरवीर का मार्ग हैं ।

"हरिनो मारग छे, शूरानो,
नहि कायरनुं काम जेने ।"

भक्तकी निर्धनता शाप नहीं है परंतु भगवान की कृपा हैं । शुभ मनोरथ करने का काम भक्त का हैं और परिपूर्ण करने का काम प्रभु का हैं । भक्त प्रभु के जिस स्वरूपका निरंतर चिंतन करता हैं उसको उसी स्वरूप में प्रभु दर्शन देते हैं । मानव जीवन का परम लक्ष्य भगवद् प्राप्ति होना चाहिए । इसलिए भगवान का भक्त हो उसे भगवान में दृढ प्रीति रखनी चाहिए ।

भगवान के अनन्य भक्त मुक्ति नहीं परंतु भक्ति मागते हैं । "भक्त और भगवान को जोडने वाली कड़ी का नाम ही भक्ति हैं ।" यही है भक्ति की परिभाषा । भगवान अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर स्वरूप का दान मांगते हैं । भक्ति ही भक्त के लिए भगवान को प्राप्त करने का एक मात्र साधन हैं । कर्म, ज्ञान और भक्ति द्वारा प्रभु की प्राप्ति होती हैं ।

भक्ति मार्ग श्रेष्ठ हैं । भक्ति की महिमा अनंतकाल से गायी जा रही हैं। ज्ञान से ज्यादा भक्ति श्रेष्ठ हैं । संतोने इस मार्ग की आराधना की हैं। शास्त्रकारों ने । नवधा भक्ति पर भार दिया हैं ।

श्रवणं कीर्तनं विष्णों स्मरणं
पादसेवनम् ।
वंदनं अर्चनं दास्यं, सख्यं
आत्मनिवेदनम् ॥

यह नौ प्रकार की भक्ति सर्व सुलभ हैं । कुछ लोग दशवां प्रकार बताते हैं । और वह है "प्रेम लक्षणा भक्ति" महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजीने "भक्ति" की परिभाषा इस तरह की हैं -

"माहात्म्य ज्ञानि पूर्वस्तु सुदृढः ।
सवोऽधिक स्नेहो भक्ति प्रोक्तः ॥"

जड-चेतन में भगवान को देखने का प्रयास करो । सर्वात्मभाव को साकार करो, आत्म समर्पण करो, "जो हर लेता वह हरि है" । भगवान स्वामिनारायण ही श्रीहरि हैं, क्योंकि वे अपना स्मरण करने वाले जीव के जन्मों के पापों को हर लेते हैं । भगवान की उपासना के द्वारा उपासक के आध्यात्मिक डन्नति और मुक्ति होती हैं ।

भगवान के साथ भागीदारी करने से लोग की भीड चली जाती हैं । भगवान की जो निष्काम भक्ति करता हैं । वही सिद्धियों से भी उत्तम फल की प्राप्ति करता हैं । जिसने भगवान की भक्ति का आनंद लिया हैं । स्वाद चखा हैं, उसकों संसार के किसी भी चीज की आकांक्षा नहीं रहती हैं ।

भक्ति का मार्ग अर्थात् अपने अहम् को संपूर्ण विसर्जन करके अपनी जात को प्रभु के चरणों में संपूर्ण समर्पण करता हैं । भक्ति करने वाले का हृदय स्फटिक जैसा स्पष्ट और पानी जैसा निर्मलि होता हैं, तो ही परमात्मा का वास उसमें होता हैं, ज्ञान, ध्यान और संयमस्मी भक्ति ही मुक्ति का (मोक्षका) मुद्रालेख हैं ।

"भूतण भक्ति पदारथ मोटु,
ब्रह्मलोकमां नाही रे ।"

यह हैं नरसिंह महेता की भक्ति का विशेषांश ।

सत्संग सुरभि : कचड़े में कुंदन का वास

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला



गाँव कथरोट में कचराभगत रहते थे । पहाड पर बसा हुआ एक छोटा सा गाँव । भगत और उनकी पत्नी दोनों ही सब्जी बेचने का व्यापार करते थे । सब्जी बेचते-बेचते जो भी कुछ मिलता उसमें से धर्मादा का निकालकर बाकी बचे हुए में से जीवन का व्यवहार चलाते थे । व्यहार भले ही दुर्बल हो परंतु श्रीहरि के प्रति श्रध्धा और दृढता दोनों ही संपूर्ण शूरवीर के थे ।

एक दिन श्रीजी महाराज आधोई से कंथरोट पधारे । अपने भक्त कचरा को देखने के लिए भगवान पहाड चढ़कर ऊपर आ गये । सुबह के समय किसी को भी बताये बिना प्रभु अकेले आए ।

अपने आंगन में अपने प्रभु को पधारे हुए देखकर कचरा भगत तो खुश-खुश हो गये । महाराज को बैठाया और दंडवत प्रणाम किया ।

महाराजने कहा कि, "दंडवत रहने दो, मुझे बहुत ही भूख लगी है । सच्चे भक्त के घर जब भगवान पधारे तब भगवान को भूख लगती हैं ।

कचरा भगत ने कहा, "परंतु महाराज, एक तकलीफ हैं । हमारी घरवाली मायके गयी हुयी है । घर में मैं अकेला हूँ । और अभी बाकी के लोग सब्जी लेने गये है । जो मैं आपके लिए रोटी बनाऊ तो सब ग्राहक वापिस लौट जाएगें । हम लोगों को तो महाराज रोज का कमाने का और रोज का खाने का । ग्राहक सब वापस चले जाएगे तो हम खाएगे क्या ?

कैसा भोला भक्त ! खुद की परिस्थिति आसानी से महाराज को बतादी । महाराज मंद मंद हसने लगे । प्रभुने कहा, "ऐसा करो, आप, रोटी बनाइए हम सब्जी बेचते है ।" भगवान को तो रसोई बनाने आती थी परंतु उनको तो भक्त के हाथो का बना हुआ भोजन बहुत अच्छा लगता है । खुद के प्रेमी जो भक्तजन अपने प्रेमी भक्तजन को प्रेम करने के लिए ही अनंतकोटी ब्रह्मांड के अधिपति आज धरती पर आकर घर-घर विचरण कर रहे हैं । कचरा भगत थोडी देर विचार करने लगा । उसे दूसरा विचार नहीं था । बल्की एक डर थी । महाराज तो बहुत दयालु है, बहुत उदार है । यदि साग बेचने बैठे और कोई खरीदने आए तो उसकी थैली में पूरी टोकरी भरके डाल देंगे । तो मेरा बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा ।

लेकिन भगवानने कहा, "ना तो कर नहीं सकते है ।" भगवान भोला भक्त के मन के संकल्प (विचार) को जानकर हंसने लगे ।

महाराज तो आसन पर बैठकर के साग बेचने लगे । इधर तो भक्त रसोई में रोटी बनाने लगा । और मन

महाराज में लगा रहता क्योंकि कही महाराज किसी को साग अधिक तो नहीं दे देंगे । कचरा भगत की चितवृत्ति महाराज क्या कर रहे हैं यह जानने के लिए स्थिर हो गई । इसी समय कोई बहन साग लेने के लिए आई महाराज तराजू तैयार किये । एक पलडे में दो सेर का वजन रखे और दूसरी तरफ बैगन रखे । और तराजू को उठाये साग की तरह नमता हुआ देखकर महाराज ने बड़े बैगन को निकाल कर छोटे बैगन को रखा । एक समान कांटा होने पर महाराज ने कहा लो तुम्हारा दो सेर बैगन हो गया । साग लेने वाली ने पूछा "आप कौन हैं ? क्या आप सोना तौलने बैठे हैं ? भगत तो सदा अधिक ही देते हैं । आप हैं कौन ?" श्रीजी महाराज ने कहा, "हम जो भी हैं आप से क्या लेना, आपको लेना है तो लो नहीं तो चली जाओ ।" यह कोई मुक्त में नहीं आता । आधोई पहाड़ से लाते हैं । घोडे का भाडा भी देते हैं । भगत यह संवाद सुन रहे थे । भगतने विचार किया की महाराज कीसी को एक अधिक वस्तु दे नही सकते हैं । भगवान को तो सब कुछ आता हैं । उदार भी हो सकते हैं और कंजूस भी हो सकते हैं । लेकिन यह सब भक्त के लिए है ।

कचरा भगत ने सुंदर रोटी बनाई और बैगन का गरम गरम साग तैयार किया । गरम-गरम हलुवा भी तैयार करके भगवान को अर्पण किया । महाराज प्रेम से गरीब भक्त के हाथ की रसोई जिमें । खाते-खाते महाराज कहने लगे, "हे भक्त, आप बहुत दुखी हो । आप के दुख दूर करने के लिए ही हम आये हैं । आज ही इस घर को खाली करके सभी सामान को भरकर आधोई चले जाओ । वहाँ तुम सुखी हो जाओगे । महाराजने आशीर्वाद दिया । भक्त ने कहाँ अच्छा महाराज, जैसा आप कहेंगे वैसा करुंगा । महाराज प्रसादी का बचा हुआ भोजन भक्त को दे दिये । बाद में महाराज वहाँ से विदा लिये । जहाँ तक भक्त की दृष्टि भगवान पर पड रही थी वहाँ तक भक्त भगवान को एक नजर से देखता ही रह गया । भगवान की आज्ञा हुई इसलिए सायम काल में घर आए और दूसरे दिन घर की सभी सामान लेकर आधोई गाँव में चले लगे । कोई संशय मन में नहीं रहा । महाराज ने कहा हैं तो करना हैं । अधोई गाँव में भक्त का साग-भाजी का व्यापार खूब चला । बाद में महाराज के आशीर्वाद से भक्त खूब सुखी हो गया । आज भी कचरा भगत के परिवार में सभी सत्संगी और सभी सुखी है । महाराज जैसा कहे वैसा हम करते रहे तो जीवन में सुख ही सुख हैं । और महाराज के विचारों के शुद्ध तर्क वितर्क से तौलने जाए तो जैसा कि महाराज कहते है, "हमारे और आप में कुछ लेना देना नहीं हैं जो मुझे सच्चे विचार से अर्पण करता है उसी के लिए यह सब कुछ हैं ।"

नाम भले कचरा भगत था परंतु उसी कचरा भगत के हृदय में श्रीहरि के प्रति आश्रित श्रद्दा और निष्ठा का कुंदन सदा चमकता रहता था ।

पोस्ट किया हुआ अंक वापस आने के संदर्भ में

देश विदेश में श्री स्वामिनारायण मासिक के हजारों वांचक है । प्रतिमास की ११ ता. को अहमदाबाद के P.S.O. रेलवे स्टेशन कालुपुर से सभी अंक एक ही साथ मेईल किया गया था । अहमदाबाद सीटी पीन कोड के अनुसार गुजरात के प्रत्येक जिले में आऊट स्टेट अलग सोटिंग करके पोस्ट किया गया था । विदेश के अंक भी फेकिंग करके उसी दिन पोस्ट किया जाता है । (गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी) फिर भी कितने सभ्यों का मासिक अंक वापस आ जाता है । इस लिये जो भी सभ्य अपना निवास स्थान या पता बदल दिये हों, वे सभ्य नं. के साथ अपना पूर्ण पता पत्र द्वारा या फोन द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें ।

विदेश के सभ्यों को अंक के प्रथम पेज पर इ-मेईल नं. दिया गया है । उस पर अपना ग्राहक नं. के साथ नया पता अवश्य सूचित करें । आप इसके लिये थोड़ा नियमित होंगे तो कार्यालय के कार्य में सरलता होगी । कार्यालय को काम लोड़ नहीं पडेगा । हमारी सूचना यदि आप को योग्य लगी हो तो आप अपने पड़ोशी को या अपने रिश्तेदार को या संबन्धी को जिसनें अपने स्थल परिवर्तन किया हो तो इस कार्य में आप जरुर मदद करें जिससे उन्हें भी इसका लाभ मिले और संस्था का नुकशान न हो यह सभी के सेवाका कार्य है ।

महाराज सभी बालकों के

- साधु प्रियव्रतदासजी, अहमदाबाद

श्रीजी महाराज और बालक अर्थात् एक अलग दुनिया । प्रत्यक्ष परमात्मा श्रीजी महाराज और निर्दोषताके प्रतीक जैसे बालक के भाववाही प्रसंग की अनुभूति अर्थात् आनंद के साथ प्रेरणा, जिज्ञासा की पूर्ति के साथ ही संस्कार, स्नेह के साथ ध्यान और भक्ति के साथ सत्संगी बनने का एक दिव्य अनुभव ।

गढडा के रावल जाति का एक बालक था । वह कईबार श्रीजी महाराज के पास अपनी गाने की कला को प्रस्तुत करता । बालक छोटा परंतु वह गीत सुंदर गाता था । श्रीजी महाराज भी उसकी क ईबार तारीफ करते थे । और प्रसन्न होकर सुंदर भेंट देते थे ।

एक बार श्रीजी महाराज ने कहाँ, "आज कुछ मिलनेवाला नहीं हैं ।" बालक अपने दोनों हाथ जोडकर बोला, "महाराज मुझे कुछ भी नहीं चाहिए । मैं तो बस आपकी प्रसन्नता के लिए ही गाता हूँ । आप खुश हो जायें यही मेरी सब से बडी भेट हैं ।

श्रीजी महाराज बालक की समझदारी से खूब प्रसन्न हुए और उस बालकको अपने कींमती वस्त्र भेट में दे दिये । जो चीज आज तक किसी को न मिली वह चीज उस बालक को मिल गई ।

एक बार श्रीजी महाराज और उनके दरबारी घोडसवारी करते रोजका गावँ में आ पहुँचे । गाँव में तीन चार बच्चें खेल रहे थे । उन सब बच्चों ने श्रीजी महाराज और बाकी घोडसवारों को देखा । सबने खेलना बंद कर दिया और महाराज के पास चलें गये । सब बोलते हुए जा रहे थे, "संत आए, संत आए ।"

श्रीजी महाराज तो बालको को देखकर प्रसन्न हो गये । सब को इशारा करके नझदीक बुलाया और कहा, "आओ, एक कहानी सुनाते हैं ।" ऐसा बोलकर एक सुंदर कहानी शुरु कर दी । बालकों का झुंड श्रीजी महाराज के अगल-बगल बैठ गया । और तल्लीन होकर कहानी सुनने लगे ।

बाद में श्रीजी महाराज ने बालकों को रस हो और कुछ जानने के लिये मिले ऐंसी सुंदर कहानी कहीं और सत्संग की महिमा समझाया ।

अंत में श्रीजी महाराज ने पूछा, "लहसुन-प्याज के बिना भोजन करने का नियम कौन लेगा ?" उस समय देवायत गढवी का बेटा तैयार हो गया । श्रीजी महाराज उस पर खूब प्रसन्न हो गयें । श्रीजी महाराज को प्रसन्न देखकर के सभी लडके तिलक चंदन करने का नियम ले लियें । श्रीजी महाराज लोया में बिराजमान थे । सुराखाचर और अन्य भक्तों के साथ में सत्संग की बात चल रही थी । उसी समय सुराखाचर की आठ वर्ष की बेटी बलुबा संतो की नकल करते हुए बोली, " जय सच्चिदानंद !"

यह सुनकर श्रीजी महाराज ने पूछा, "यह कौन बोला ? बलुबा दौडते हुए आई और कही, "मैंने ही चील्लाई थी ।" तो आप, "जय सच्चिदानंद क्यों बोलती हो ?"

मुझे जब भूख लगती हैं तो इसी प्रकार बोलकर के रोटी मांगती हूँ । श्रीजी महाराज के संत भी "जय सच्चिदानंद" कह के ही भिक्षा मांगते हैं ।

संतो जैसे विचार बलुबा में देखकरके श्रीजी महाराज बहुत प्रसन्न हुए । स्वयं खडे होकर कोठी में से रोटी और दहीं निकालकर बलुबा को दिया । बलुबा तो खुब प्रसन्न हुई । बलुबा की माता शान्ति बा महाराजकी वालको के प्रति इस प्रकार की ममता देखकर के गद्‌गद् हो गई । इसी प्रकार एकबार श्रीजी महाराज काठी दरबारों के साथ सारंगपुर से कुंडल जा रहे थे । घोडो की टाप की आवाज सुन करके गाँव से बाहर वैर बीनती हुई कुछ स्त्रियां लुटारुं

अनु. पृष्ठ १८ पर

विद्यार्थियों की छुट्टी

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प्यारे विद्यार्थी मित्रों यह अंक आपके हाथो में आयेगा तब छुट्टियां चल रही होगीं । बहुत गरमी पड रही होगी । छुट्टिया होगी तो एक हप्ते खूब आनंद आयेगा । अच्छा हुआ छूट गये कितने दिनो से परीक्षा की चिंता थी, रात को जागते थे अब मुक्त हो गये। छुट्टियो के पहले हप्ते तो खूब आराम कर लिया । सुबह देर से उठे मित्रो के साथ थोडा घूम आये ।

क्या पूरी छुट्टी ऐसे ही बिता देंगे ? ना नही ! सोच लेना, समय व्यर्थ ही जायेगा । घनश्याम महाराज खुश नहीं होगें । प.पू. लालजी महाराजश्री खुश नहीं होंगे । अरे, आपके माता-पिता भी खुश नही होंगे । बुहत ही बड़ा नुकशान होगा । जिनके गले में भगवान के शरणागति की कंठी नही होती, कपाल में भगवान का चिन्ह तिलक नही होता, मुख में भगवान का नाम नही होता ऐसे फिल्मी कलाकार स्त्री पुरुष इकठ्ठा होकर, खराब हरकते करते हैं जिसमें स्त्रियों ने आधे आधे वस्त्र पहने हो नाचगान करती है । गान करने में कही परमात्मा का नाम नही होता । सांसारिक विषय भोग के साधन होते है । यह बार बार देखने से मन विकृत बनता है । बार बार मारपीट देखने से आपका मन भी आवेश में आयेगा । स्वभाव चिडचिडा हो जायेगा । घर में पूरे दिन आवाज होगी । आप नित्यक्रम भूल जायेंगे, माता-पिता की सेवा भी भूल जायेंगे । फिल्मी कलाकार तो लाज शर्म छोडकर, घर मर्यादा तोडकर धनार्जन करते है । लेकिन आपने पूरे दिन उन्हे देख कर क्या पाया ? समय की बर्बादी । पैसो की बरबादी । टी.वी. भी बिजली से चलती है । और चश्मे के नंबर भी बढ जाते है ।

इसलिए छुट्टियो में जल्दी उठ कर स्नान कर पवित्र हो जाये और पूजा पाठ करो । मंदिर में दर्शन करने जाओ । देव दर्शन कर सच्चे संतो का आशीर्वाद प्राप्त करो । बालमंडल की सभा में अवश्य जाओ । माता पिता को प्रणाम कर उनके कार्यो में हाथ बटावो, उनकी सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करो । माता से रसोई शीखो । रसोई आयेगी तो भविष्य मे काम लगेगी । महाराज के कीर्तन कंठस्थ करो और भगवान के सामने उच्चस्वर में बोलो । सभा में गा कर सभा जनो को राजी करो । महाराज के छपैया अयोध्या में किये बाल चरित्र की पुस्तक का पठन करो । इस पठन से इतना सुख मिलेगा की उस काले डब्बे (टी.बी.) का सुख मिथ्या लगेगा ।

घनश्याम महाराज छपैयामें नारायण सरोवर, खोपा तलाब, मीन सागर, गौघाट, विश्वामित्री नदी मखोडाघाट अनेक पवित्र स्थळ पर घूमते या अयोध्या में रामघाट, स्वर्गदेरी, लक्ष्मणजी मंदिर, नागेश्वर महादेव, कनक भुवन, रत्न सिंहासन, राम महोल, जन्म स्थानक, कोप भवन रंग महोल तथा रामकोटी हनुमानगढी, मणिरत्न पर्बत, विद्याकुंड सीताकुंड सूर्यकुंड, भाटेश्वर महादेव तथा सरयुगंगा आदि स्थानो पर दर्शन के लिए जाते, खुद भगवान थे फिर भी । हमारे आचरण के लिए । वे पिता धर्मदवे से वेद, पुराण, ज्योतिष, इतिहास आदि चौदह विद्या और चोसठ कलाये सीखते थे। घनश्याम महाराज ने यह सब केवल १७ दिनों में ही सीख लिया था । आप घनश्याम महाराज की कृपा से यह सब सीख शकते है । और समय के अनुरुप कम्प्युटर तथा अंग्रेजी भाषा पर भी प्रभुत्व प्राप्त कर शकते हैं ।

यह सब छुट्टियों में ही हो शकता है पाठशाला शुरु होने के पश्चात नही हो शकता ।

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के आसपास कितने प्रसादी के स्थल है। पूरा मंदिर प्रसादी का । नारायणघाट, भीमनाथ मंदिर, दरियाखान घुम्मट, रामबाग, बालस्वरुप हनुमानजी, भद्र का किल्ला, रामजी का मंदिर श्वेत कृष्ण मंदिर,

रायपुर दरवाजे का मंदिर, मकुलधीर मंदरि, महालक्ष्मी मंदरि, हनुमानजीका मंदिर, वैरागी का मंदिर, नृसिंह मंदिर, केम्प के हनुमान, कोटेश्वर महादेव, जेतलपुर मंदिर, देव सरोवर आदि स्थलो पर घूम शकते है ।

इसी प्रकार वडताल मंदिर, गढडा, जूनागढ, भुज, मूली, धोलका, धोलेरा, छपैया तथा उन मंदिरो के आसपास के दर्शनीय स्थल देखे तो अपार आनंद आये । प्रसादी की नदियों में स्नान करो, तीर्थयात्रा करो, तीर्थो के पवित्र संतो का समागम करो । प्राकृतिक आनंद से भरे हुए बगीचे में जाओ । वडताल का ज्ञानबाग अध्यात्मिक - प्राकृतिक सौदर्य से भरपूर है । समग्र वडताल वैकुंठधाम के समान अमदाबाद बद्रीधाम के समान तथा जेतलपुर वृंदावन के तुल्य, गढडा अक्षरधाम के समान है । अब बोलिए कहाँ समय व्यतीत करना है ।

छुट्टियो में आगामी शैक्षणिक वर्ष की तैयारी भी कर शकते है । विद्यार्थी अवस्था ब्रह्मचर्य का है । विद्या प्राप्ति के लिए गुरु की सेवा करनी चाहिए, प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की सेवा करनी चाहिए, ब्रह्मचर्य का पालन करना, जितेन्द्रिय बन विद्या प्राप्त करना, सत्य, लज्जा, ज्ञान, धैर्य, तप, शम, दम आदि गुण जीवन में उतारने चाहिए और काम, क्रोध, शोक, मोह का त्याग करना । गुरुऔर बडो को प्रणाम करे, वृद्धो की सेवा मे प्रेम रखे वही विद्यार्थी आयुष्य, बल, ज्ञान और बुद्धि प्राप्त करता है । जुआ और बगीचे में टहलने की आदत, स्त्री में आशक्ति, आलस्य, निंद्रा और बहु मित्र और फेशन, व्यसन विद्या प्राप्ति में विघ्न करते है । विद्यार्थियों को कुसंगत का त्याग करना चाहिए, नृत्यगीत (पिक्चर) नही देखना चाहिए, असत्य नही बोलना चाहिए, खटिया पर नही सोना चाहिए । कृषिकर्म करने वाले किशानो के पुत्र अपने जानवरो को पानी पिलाये, घास खिलाये, माता को मदद करे तो माता-पिताभी आशीर्वाद देते है ।

हाथ में से निकला समय वापस नही मिलता । इसलिए समय का सदुपयोग करना चाहिए, व्यर्थ नही गवाना चाहिए ।

जिंदगी जब तक रहेगी, फुरसद न होगी काम से,
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम करलो भगवान से, प्रेम हो जाये राम से ।

यह काव्य केवल मनुष्य के लिए ही है । विद्यार्थियो को छुट्टी मे ही फुरसद मिलती है, वे उसका हरप्रकार से सदुपयोग करें, घनश्याम महाराज, प.पू. लालजी महाराज, और प.पू. आचार्य महाराजश्री बहुत प्रसन्न हो एसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

अनु. पृष्ठ १६ से

महाराज सभी बालकों के

समझकरके भाग गई । लेकिन एक छोटी बाला अमरबा रुक गई और भय से काँपती रही । श्रीजी महाराज उसे काँपते हुए देखकर के उसके पास गये और पूछे, "तुम क्या कर रही हो ?" घबडाई हुई वह बाला अपने वस्त्रो में ऐकत्रित किये हुए बैर को बताया । श्रीजी महाराज ने कहाँ, "मुझे खाने को दोगी ।" उसने सभी बैर सामने रख दिये । श्रीजी महाराज ने उसमे से चार बैर लिया और कहाँ, "तुम्हे चारो पुस्मार्थ सिद्ध हो जायेंगे । (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) तुम अब डरना नही.

इस प्रकार गाँव के बालकों को भी भगवान ने निर्भय बना दिया । श्रीजी महाराज को बालको के प्रति कितना प्रेम था । बालको का और श्रीजी महाराज का सम्बन्ध बडा अलौकिक था । श्रीजी महाराज बालको से माता जैसा प्रेम करते थे और पिता जैसा स्नेह करते थे । इस लिए यह कहा जा सकता है कि, "सभी बालक महाराज के और माहाराज सभी बालकों के ।

अक्षरधाम वर्णन

- प्रभुदास भायाभाई मिस्त्री (भावनगर)



प्यारे हरिभक्तों ! हम सभी सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के आश्रित हैं। भगवान की भजन-भक्ति करते हैं। क्यों करते हैं ? इसलिये कि भगवान हमें अपना अक्षरधाम दें। हमें जहाँ जाना हो वहाँ का सतत चिन्तन करते रहना चाहिए। क्योंकि जहाँ भी हम जातें है वहाँ से वापस घर आकर ही विराम लेते हैं। इसलिए अक्षरधाम में जाने के लिए सारंगपुर-११वां वचनामृत नृसिंहानंद स्वामी का प्रश्न अवश्य वांचना चाहिए। अब हम मूल बात पर आजांय कि अक्षरधाम कैसा है, वहाँ भगवान कैसे विराजमान है। इसबात को परम पूज्य आचार्यश्री विहारीलाल महाराजश्रीने हरिलीलामृत कलश-२ विश्राम ११ में खूब अच्छी तरह से स्पष्ट किया है। जो नीचे स्पष्ट कर रहे हैं।

श्री स्वामिनारायण भगवान श्री घनश्याम के स्प में जब छोटे थे तब भक्ति माता को प्रत्येक धाम, वैकुंठ, गोलोक, श्वेतद्वीप इत्यादि घुमाकर बाद में अक्षरधाम लाते है। वहाँ जितने धाम है उसमें अक्षरधाम की शोभा अधिक हैं। जहाँ करोणों सूर्य चंद्र प्रकाशित होते हैं। जिसका प्रकाश शीतल है। आंख या शरीर को थोडी भी गर्मी नहीं लगती है। जहाँ पर काल माया की गति नहीं है। काम, क्रोध, लोभ, मोह जहाँ दिखाई नहीं देता। जहाँ ज्योति के स्प में चिन्मय सभी वस्तुये हैं। जहाँ पृथ्वी, पवन, अग्नि, जल, सूर्य, चंद्र, धन, दंपति, पुत्र, माता, पिता, जहाँ कर्म का लेख लिखा जाता नहीं है। जिसका संम्पूर्ण लेख संभव नहीं। जिसे वेद भी नेति-नेति कहते है। जहां रोग-व्याधि नहीं है। अष्टावरणों से दूर है। इसीलिए तो वचनामृत में स्वमुख से कहा है। हम कहाँ से आये हैं ? लाखमन लोहा अक्षधाम में से छोडे और वह वायु के वेग से रजकण हो जाय। अर्थात् इतना अधिक दूर है। अनंत ब्रह्मांड जिसके भीतर उडते रहते हैं। भगवान तो सुख की निधि है। जिससे प्रत्येक लोको का सुख नरक तुल्य लगता हैं। जो मुक्तात्मा हैं वे स्वेच्छया नाना स्प धाण कर सकते हैं। कोई मणिक, कोई देव, कोई ध्वजा कलश स्प धारण कर के प्रकाश करते हैं। कोई हाथी, घोड़ा वाघ, स्प में हरि के चरित्रों को गाते हैं। कोई हरिकी पादुका बनते हैं। कोई छत्र बनते हैं - सभी स्वतंत्र हैं आनंदस्प श्रीहरि की मूर्ति हैं। श्रीजी महाराज ने मध्य गढडा-१३ वे वचनामृत में कहा है कि - भागवती तनु भगवान कैसी देते हैं ? तो जिसे भूख-प्यास लगती ही नहीं है। ऐसी दिव्य तनु देते हैं। मुक्त भगवान के वश में ही बर्तन करते हैं। जो आज्ञा का कभी उल्लंधन करते ही नहीं है। जड वस्तु वहाँ दिखाई नहीं देती है। सभी चैतन्य है। अपार सभी का ऐश्वर्य है। तो भगवान का ऐश्वर्य कितना होगा। जैसे सभी समुद्र का पानी पीकर बलवान होते हैं लेकिन समुद्र कम नहीं होता, इसी प्रकार भगवान का ऐश्वर्य कम नहीं होता है। दूसरेधाम अक्षरधाम की अपेक्षा कम है अब अक्षरधाम में कौन सी भाषा बोलेंगे तो इसका उत्तर परब्रह्म चरित्र सार संग्रह में है उसी के अनुसार दिव्य बाणी बोली जाती है।

अक्षरधाम तथा सिंहासन का वर्णन : धाम के बीच में मंदिर हैं। १६ दरबाजे हैं। चैतन्य मय अनेकों खंभे है। मोती के तोरण लगे हुए है। उसके बीच में भगवान का रत्नजडित

सिंहासन है । पुष्प की वृष्टि होती रहती है । जिसके ऊपर भगवान विराजमान रहते है । सिंहासन पर गद्दी लगी है । जिसके ऊपर भगवान विराजमान है । मुक्त लोग चंवर डुलाते हैं । अनेक मुक्त हाथ जोडकर खडे रहते हैं । कोई नृत्य करते हैं । कोई कीर्तन गाते है । कोई स्तुति करते हैं । कोई प्रभु के सोलह चिन्ह को निहारते हैं । नाना प्रकार की सेवा मुक्त लोग करते हैं ।

भगवान नाना प्रकारके अलंकार धारण किये हुए हैं । कंठ में कौस्तुभ मणिका हार धारण किये हुए हैं । नग जडे हुए, सोने के बाजुबंद पहने हुए है। दशों अंगुलियों में हीरा जडित अंगुठी पहने हुए है । चरण में सोने की पायल पहने हैं । कमल के समान नेत्र है । केसर के तिलक किये हुए हैं । कुमकुम लगाये हुए हैं । मयूर मुकुट धारण किये हुए हैं । कान में कुडंल धारण किये हुए हैं । करोडो सूर्य और चन्द्रमां के जितना तेज निकल रहा हैं । चौबीस अवतार इन्ही की मूर्ति में से निकल करके विलीन हो रहे हैं । चारों वेद गान कर रहे हैं । अपार समृद्धि अक्षरधाम की देखकर भक्तिमाता, आश्चर्य युक्त हो गई है । जब समाधि से बाहर आई तो पुत्र को सामने देखने के बाद में प्रेम और बढ़ गया । भक्ति माता धर्मदेव से सभी धामों का तथा दिव्य अक्षरधाम का वर्णन करती हैं । प्रभु के गुणों का कोई पार नहीं पा सकता हैं । बाद में घनश्याम भक्तिमाता को दिव्य ज्ञान से अपने पास रखते हैं ।

नियम, निश्चय और पक्ष

- अरविंदभाई नटवरभाई पटेल (विनायकपुरा)

अपने संप्रदाय में तीन विधि मुख्य हैं । नियम, निश्चय और पक्ष ये तीनो अंग जिसमें दृढ हो वही सत्संगी कहलाता हैं । नियम की बहुत पहले की यह सत्य घटना हैं । वांढ वाडी गाँव के एक भक्त छोटी उम्र से ही भक्ति के रंग में रंगा गये । बाल्यावस्था में ही पिता की छत्रछाया हट गइ । आर्थिक स्थिति सामान्य थी । गाँव के नव युवानों के साथ साबरकांठा के बोडेली कपास की जिनमें नोकरी करने गये । जिन प्रातः प्रारंभ हो जाता और रात्री में बंद होता । भक्त को प्रातः नहा धोकर सेवा पूजा करने का नियम था । जिससे भक्तने संचा कपास भरने का काम दूसरे के ऊपर सौंपकर सेवा पूजा करके हीं वापस काममें आते थे । इस प्रकार यह अधिक दिन नहीं चला । क्यों कि बगलवालेने संचा कपास भरने के लिए मना कर दिया । इसलिए भक्त ने निश्चय किया की ऐसी नौकरी अब नहीं करेंगे जिसमें सेवा पूजा का नियम टूट जाता हो । बाद में काम पर न जाकर जिन की आफिस में जाकर मुनिम से अपने हिसाब की बात की, हमें आपके यहाँ नौकरी नहीं करनी । अब हमें घर जाना हैं । मुनीम ने कहाँ, "भक्त ! नौकरी क्यों छोड रहे हो ?" तब भक्त ने अपनी संपूर्ण स्थिति को बताया । मुनीम ने कहा शेठ आयेगा तो यह बात हम शेठ को बतायें गे । शेठ आयातो मुनीम ने शेठ से सभी बाते बतादी और शेठने भक्त को बुलाकर उससे स्पष्टता की मस्तक पर श्री स्वामिनारायण भगवान का तिलक और गोल कुमकुम देखकर श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रति शेठ के हृदय में भाव जागा और उसने कहाँ, "भक्त, नोंकरी छोडने की कुछ जरुरत नहीं हैं । आप अपने सेवा-पूजा के नियम में रहिये । आज से आपको सुपरवाइजर की नौकरी दे रहा हूँ । अब आपको प्रातः काल जिन चालू कराकर कारीगरों को संचा पर बौठाकर कारीगर काम चालू कर दे बाद में स्म पर जाकर नहा-धोकर सेवा-पूजा करके जित में आना । रात्रिमें कोई कारीगर सोता हो तो ऐक छडी देतां हूँ उससे खखडाकर जगा देना । बाद में जो आपका समय बच रहा है उसमें नीम वृक्ष के नीचे कुरशी पर बैठकर भगवान के नाम की माला जपते रहना । आज से आपका वेतन भी बढा देता हूँ ।

देखा न, भगवानने जो नियम दिया हैं उस नियममें रहकर व्यवहार करेंगे अर्थात् नियम को नहीं छोडेंगे तो उपरोक्त भक्त की तरह आपके जीवन में भी अनेको लाभ मिलेगा ।

हमे भी नियम, निश्चय और पक्ष रखना चाहिए । जिससे श्रीजी महाराज हमारे ऊपर प्रसन्न होकर यह लोक और परलोक दोनों ही सुधारेंगे । इसमें कोई शंका का स्थान नहीं हैं ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्रीहरि प्राकट्योत्सव धामधूम से मानाया

अहमदाबाद मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में रामनवमी को धामधूम से मनाया गया था।

प्रातः काल अक्षरभुवन में बिराजमान बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो से वैदिक विधिसे संपन्न हुआ था। गाँव और शहर के लाखो हरिभक्तोने श्रीजी महाराज के वचन अनुसार इस उत्सव का दर्शन कर जीवन धन्य बनाया। पूरे दिन भक्तो की भीड से मंदिर भरा था। रात्रि को १०-१० बजे श्रीजी महाराज के तीनो अपर स्वरूपोने उनके दादाकी प्राकट्य आरती उतारकर भक्तजनो को दिव्य लाभ दिया था। इस अवशर पर पूज्य महंत स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और सेवाभावी हरिभक्तो ने सुंदर प्रेरणा दी थी। - *विनोद पटेल*

प.पू. बडे महाराजश्री का ६१वाँ जन्मोत्सव धामधूम से संपन्न हुआ

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के दरबार में उत्सव की परंपरा चलती रहती है। श्री नरनारायणदेव देश में धर्मवंशी आचार्यश्री, संत और हरिभक्तो का सहकार श्रीहरि की कृपा का फल है। अहमदाबाद, मूली और भुज के संत सभी उत्सव में उपस्थित हो जाते है। यह अपना भाग्य है।

चैत्र कृष्ण-३ यह तो छोटे बच्चो से लेकर १०० वर्ष के वृद्ध संत, हरिभक्त और अन्य धर्मप्रेमी भी जानते है की पूज्य आचार्य महाराजश्री का प्राकटोत्सव २१वी शताब्दी विश्व के लिये कैसा भी हो लेकिन स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रितो के लिए खूब सुंदर है, समग्र सत्संग को श्रीजी महाराज के तीन पीढी का सुख मिल रहा है। यह जीव समझे तो उद्धार हो जाये। जैसे महाराज के समयकी याद करने से कैसा भाव उत्पन्न होता है। प.पू. बडे महाराजश्री के लिए कोई आश्रित और अनाश्रित के प्रति जो लगाव है वह अकल्पनीय है। ६१वाँ प्राकटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में और प.पू. लालजी महाराज की उपस्थिति में धामधूम से संपन्न हुआ। चालु दिन था। फिर भी सभा मंडप में पांव रखने की जगह नही थी। सभा में विद्वान पंडितोने स्वस्ति वाचन और शुभकामना दी तत्पश्चात पू. महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी ने सभा संचालन करते हुए अनेक दिव्य प्रसंगो का वर्णन किया था। बडे महाराजश्री के संकल्प के लिए यहाँ के वयोवृद्ध ब्रह्मचारी शा.स्वा. जगतप्रकाशानंदजीने उनके गुरु परंपरा के हस्तप्रत पुस्तक महाराजश्री को भेट दिए। पश्चात पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदास, महंत प्रेमस्वरूपदास, शा.स्वा. केशवप्रसादजी, शास्त्री स्वामी केशवप्रसादजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, मूली मंदिर से स्वामी कृष्णवल्लभददासजी और भुज मंदिर की ओर से संत शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी आदि संतो ने अंतर भावना को बताया था। सभी की भावना में महाराजश्री के प्रति आदरभाव दिखाई देता था। बडे महाराजश्री तो दया के सागर और कृपासिंधु है। श्रीहरि सभी गुण संपन्न है। उनके दर्शन मात्र से जीव-प्राणी का मंगल ही होता है। पू. लालजी महाराजश्रीने "हैडानो हार हरि मारे रंग भीनो" स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी का कीर्तन राग में गा कर उन्होने कीर्तन भक्ति का प्रदर्शन किया था। अंत में पू. महाराजश्री ने सुंदर बात कही थी।

अभी छुट्टियाँ चल रही है, छुट्टी की मजा-आनंद परीक्षा में जिनके पेपर अच्छे गये है उनके लिए विशेष है। पर जिनके अच्छे नही गये उन्हे परिणाम की चिंता है। हमारे ३६ वर्ष के सभी पेपर अच्छे गये है। इसलिए मुजे आनंद बहुत है। छुट्टियों में प्रवृति के रूप में लालजी महाराजश्री नरनारायणदेव के लिए पार्षदो से फूल तोडवा कर स्वयं हार बनाते है। एक दिन उसी फूल बनाते वक्त फूल रखने वाले कपडे पर पाँव गलती से पड गये। तो लालजी महाराजने कहा दादा आपका पाँव कपडे पर पडा। ये हार नरनारायणदेव के लिए बनाते है। तब हमने सोरी कहा 'यह उत्तम संस्कार की परंपार है।' इससे अच्छा उदाहरण कहाँ मिलेगा। धर्मवंशी समस्त परिवार में ऐसे उत्तम गुण होंगे तो खुद भगवान के पुत्र है। संस्कार तो पारिवारीक है।

- कोठारी धर्मप्रकाशदास

कांकरिया मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव और हरिकृष्ण महाराजका पाटोत्सव मनाया गया

कांकरिया के रामबाग श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र शुक्ल-१० को श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का वार्षिक पाटोत्सव श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने ठाकुरजी का महाभिषेक वेदविधिपूर्वक संपन्न किया।

महंत स्वामी गुस्प्रसाददासजी, पू. स्वामी देवकृष्णदासजी की प्रेरणा से प.भ. नरसीभाई लल्लुभाई पटेल तथा प.भ. जयेशभाई नरसीभाई पटेल परिवार के संकल्प से पाटोत्सव मनाया गया था।

इस अवशर पर पू. महंत स्वामी निर्गुणदासी, पू. शास्त्री स्वामी पुस्त्रोत्तमप्रकाशदासजी आदि संत पधारे थे। महापूजा मे हरिभक्तो ने दिव्य भाव प्राप्त किया था।

सत्संग महासभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती पूजन का यजमान परिवारने लाभ लिया था। विद्वान संतो ने कांकरिया मंदिर का इतिहास और महिमा बताया। अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने श्री नरनारायणदेव की उपासना करने को भारपूर्वक कहा था। आभार विधि महंत स्वामी गुस्प्रसाददासने की थी। सभा संचालन शा. प्राणजीवनदासने किया था। कोठारी आनंद स्वामीने सुंदर व्यवस्था की थी। *- गौरांग पटेल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

कांकरिया मंदिर में हनुमानजी का मारुतियज्ञ

कांकरियाकी तीर्थोत्तम भूमि श्रीहरि के दिव्य चरणो से अंकित रामबाग मे पूज्य आदि आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी दादा के द्वारा प्रस्थापित बाल स्वस्प कष्टभंजनदेव का महाभिषेक-अन्नकूट और मारुति यज्ञ चैत्र शुक्ल-१५ दि. २४-४-०५ को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से महंत स्वामी गुस्प्रसादजी की प्रेरणा से यह आयोजन हुआ था। सुबह ९-०० बजे मारुति यज्ञ प्रारंभ हुआ था। तब यजमान प.भ. जैमिनभाई परीख तथा श्री ए. के. उपाध्याय और सेंकडो हरिभक्तो ने यज्ञ में बैठकर लाभ लिया था। शाम को ६ बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो से पूर्णाहुति हुई थी। सभा में महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने हनुमान जयंती की महिमा का वर्णन किया था। अंत में प.पू. महाराजश्रीने समग्र सभा को आशीर्वाद दिये थे। बहनो को दर्शन और आशीर्वाद देने के लिए अ.सौ. प.पू. गादीवालाश्री पधारी थी और प.पू. बड़ी गादीवाला भी आशीर्वाद देने के लिए पधारी थी। शाम को कोठारी स्वामी और नरोत्तम भगत ने प्रसाद की व्यवस्था की थी। हनुमान चालीसा और सुंदरकांड के पाठ भक्तो ने किए थे। हरिभक्तो ने दर्शन कर प्रसन्नता का अनुभव किया था।

- गौरांग पटेल

नारायणघाट मंदिर में त्रिदिनात्मक रात्री सत्संग सुंदर प्रकार से संपन्न हुआ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा प्रेरणा से महंत साधु देवप्रसाददास और महंत साधु घनश्यामप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से नारायणघाट श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोग से दिव्य तीर्थभूमि नारायणघाट मंदिर में दि. १६-४-०५ से १८-५-०५ पर्यन्त दररोज रात ८-३० से ११-०० तक सत्संग हुआ था। जिसमें पूज्य महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी, पू. शास्त्री स्वामी पुस्त्रोत्तमप्रकाशदासजी, शा. सिध्धेश्वरदासजी आदि संतो ने प्रवचन स्त्री अमृतवाणी दी थी। सुप्रसिद्ध कलाकार हसमुखभाई पाटडीया, जयेश सोनी पुरव पटेल, दिनेश वघाशीया, इत्यादिने कीर्तन भक्ति का भरपूर आनंद दिया था। दि. १७-४-०५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने पधार कर सबको आशीर्वाद दिया था। रामनवमी के दिन आयोजित त्रिदिनात्मक रात्री सत्संग का लाभ बडी संख्या में लोगोने लिया था।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा

जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर में श्री हनुमान जयंती मनाई गई

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री प्रभा हनुमानजी जमीयतपुरा में स्वामी विजयप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री हनुमानजी जयंती के अवसर पर हनुमान चालीसा, यज्ञ, सुंदरकांड का आयोजन किया था। ४०० जितने हनुमानजी के भाविक भक्त लाभ लेकर कृतार्थ हुए। महंत स्वामी घनश्यामप्रकाशदासने यहाँ मंदिर का और हनुमानजी का माहात्म्य बताया था। *- शा.पूर्णप्रकाशदास*

मथुरा मंदिर (यु.पी.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष फूलदोलोत्सव वहाँ की धार्मिक प्रजाने मनाया था। जिसका लाभ कई लोगोने लिया था।

कंजरी कंपा (साबरकांठा)

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में दोनो प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अंतर के आशीर्वाद से फाल्गुन सुद-७ को ठाकुरजी का पाटोत्सव सुंदर प्रकार से मनाया गया था। कलोल से स्वामी हरिचरणदासजी पधारे थे। और ठाकुरजीकी आरती तथा नित्य नियम, थाल किया गया। कोठारी डाह्याभाई और हरिभक्तो ने सेवा का सुंदर लाभ दिया था। *-कोठारी डा.पू.*

महेसाणा जिल्ले के करशनपुरा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की

आज्ञा से दि. २४-४-०५ को रात को ८ बजे विसनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, प.भ. उदयनभाई महाराजा तथा महंत तथा महेसाणा मंदिर के संतो का मंडल आदि लोगोने यहाँ सभा में भगवान संबंधी बात कर व्यसन मुक्ति और मूल संप्रदाय की निष्ठा पर प्रवचन देकर सबको सुंदर लाभ दिया था।

- भानुभाई एस. पटेल

डांगरवा श्री स्वामिनारायण मंदरि में श्रीहरि प्राकट्योत्सव मनाया गया

यहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का २२४वाँ प्राकट्यत्सव श्रीहरिकृष्ण महाराज को पारणा (झूले) में झुलाकर मनाया गया। रात को ८ से १०-१५ तक कीर्तन भक्ति तत् पश्चात् प्राकट्यत्सव की आरती के दर्शन का हरिभक्तो ने दिव्य आनंद प्राप्त किया था।

कोठंबा (पंचमहाल) मंदिरका दशाब्दी महोत्सव मनया गया

झाडी देश के कोठंबा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा प्रेरणा से तथा पूज्य सद्गुरु स्वा. करशनदासजी की प्रेरणा और पू. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के सुंदर मार्गदर्शन से दशाब्दी महोत्सव का आयोजन किया गया था। इस अवसर के उपलक्ष्य में ७-४-२००५ से दि. ११-४-०५ त्रिदिनात्मक विष्णुयाग की विधि श्री राजुभाई शुक्ल ने की थी। दि. ११-४-०५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। और उनके कर कमलो से ठाकुरजी का पाटोत्सव, पारायण पूर्णाहुति, यज्ञ की पूर्णाहुति और मंदिर के ऊपर कलश का पूजन विधिवत संपन्न हुआ था। प्रासंगिक सभा में प.भ. श्री वासुदेवभाई मगनलाल जोशी द्वारा प्रकाशित की हुई 'वचनामृतसार सरिता' का प.पू. महाराजश्री ने विमोचन कर आशीर्वाद दिया था। यह पुस्तक उनकी तरफ से श्री नरनारायणदेव के प्रत्येक शिखरबद्ध एवं हरि मंदिर को भेट देने के लिए ही छपवाया है। दि. २७-३-०५ को अ.सौ. प.पू. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवाला तथा प.पू. लालजी महाराज पधारे थे और सभी को दर्शन सुख दिया था। *-अश्विनभाई काछीया, श्री न.ना.देव युवक मंडल*

नवा वाडज मंदिर

दि. १०-४-०५ को सुबह ७-३० से १२-०० तक समूह महापूजा और प्रातः ६-३० से ७-३० तक श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक आदि कार्यक्रम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वाद आज्ञा से संपन्न हुआ था। जिस के यजमान प.भ. अनीलभाई रतीलाल सोनी थे। शास्त्रोक्त विधि श्री गोपालभाई शास्त्रीने करवाई थी।

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर

रामनवमी हरि जयंती का उत्सव प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं आशीर्वाद से नूतन शिखर मंदिर (एप्रोच) में रात्री के १०-१० बजे सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज की आरती दर्शन करने के लिए पूर्व विस्तार के हजारो भक्तजन आये थे। मंदिर का सभा मंडप, भर जाने के पश्चात मंदिर के सामने रोड पर बहुत सारे भक्त दृष्टिगोचर हो रहे थे। यह घनश्याम महाराज का अद्भुत प्रताप है। दोपहर को श्री रामचन्द्रजी भगवान की प्राकट्य आरती हुई थी। रात्री कार्यक्रम में कीर्तन भक्ति हुी थी। मंदिर के महंत श्री लक्ष्मणजीवनदासजी तथा संत पार्षद मंडल की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एप्रोच के सभ्यो ने सेवा की थी। *- गोरधनभाई वी. सीतापरा*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

रोहीशाला (हालार) श्री स्वामिनारायण मंदिर का रजत जयंती महोत्सव मनाया गया

मूली प्रदेश के संतो ने हालार मे विचरण कर प्रत्येक व्यक्ति को देव और धर्मकुल का महात्म्य और महिमा के बीज बोये गये थे। जो आज भी देखने को मिलते है। रोहीसाला में श्री स्वामिनारायण मंदिर को २५ वर्ष। पूर्ण हो रहे रहे है। जिस में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से मूली मंदिर के पू. स्वामी बालकृष्णदासजी, स्वामी बलदेवप्रसाददासजी तथा रामस्वरूपदासजी की शुभ प्रेरणा से और अक्षरनिवासी स.गु. गवैया स्वामी, कृष्णचरणदासजी, स.गु. स्वामी बालमुकुन्ददासजी, स्वामी हरिप्रसाददासजी, स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, कोठारी स्वामी कृष्णसेवादासजी तथा माधवप्रसाददासजी आदि संतो की प्रेरणा से चिलोडा के अ.नि. प.भ. रवजीभाई जीवराजभाई तथा अ.नि. प.भ. मनजीभाई जीवराजभाई के समस्त टांक परिवार की रतफ से उत्सव का आयोजन किया गया था।

इस अवसर के उपलक्ष्य में दि. १०-४-०५ से १६-४-०५ पर्यन्त श्रीमद् भागवत् पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी मुकुन्दप्रसाददासजी (मूली) और स.गु. शा. स्वामी ज्ञानवल्लभदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी और संहिता पाठ शास्त्री वासुदेवप्रसादजी शुक्ल ने

की थी। त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग के आचार्य शास्त्री जितेन्द्रभाई अमृतलाल थे।

दि. १३-४-०५ को अ.सौ. प.पू. लक्ष्मीस्वस्या गादीवाला और प.पू. लालजी महाराज पधारे थे। और अ.सौ. प.पू. लक्ष्मीस्वस्या बड़ी गादीवाला भी पधार कर बहनो को दिव्य दर्शन का अलौकिक सुख दिया था। दि. १५/१६-४-०५ को श्री नरनारायणदेवि पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। और उनके कर कमलो से ठाकुरजी का २५वाँ पाटोत्सव पारायण और यज्ञ की पूर्णाहुति विधिवत पूर्वक संपन्न हुई थी। प्रासंगिक सभा में संत महंतो ने प्रासंगिक प्रवचन किये थे। प.पू.ध.धु. महाराजश्री यमजान परिवार के सभी सभ्यो को आशीर्वाद दिये थे। सभा संचालन शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी और कृष्णप्रसाददासने संभाला था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मेगेजीन के वंश परंपरागत सभ्य बाबुभाई टांक की प्रेरणा से बने थे। विविध सेवा में पू. ज्ञान स्वामी श्री प्रकाश स्वामी, अनिरुद्ध स्वामी और पार्षद चंदुभगत आदि लोग लगे थे। - *बाबुभाई टांक, मीरा रोड*

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से हळवद में हुई सत्संग सभाये

नवा धनाळा दि. ८-४-०५ हरिपर (ध्रांगध्रा) दि. २३-४-०५ और सापकडा दि. २०-३-०५ को सत्संग सभा हुई थी जिसमें श्रीजी स्वस्म स्वामी, चराडवा के महंत स्वामी, विश्वविहारी स्वामी, निलकंठ स्वामी आदि संतोने राधाकृष्णदेव धर्मवंशी आचार्य पद पर निष्ठा रखने पर और मूल संप्रदाय पर प्रवचन किया था। प्रत्येक गाँव के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सहकार दे कर प्रेरणा दी थी। - *घनश्याम नगर, सापकडा, हरिपर, श्री न.ना.देव युवक मंडल*

हळवद मंदिर में नये मंदिर का खातमुहूर्त

यहाँ हळवद मंदिर में ता. २१-४-०५ के दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर की खातविधि वेदविधि से अपने हाथो सम्पन्न किया।

उपरोक्त प्रसंग में अहमदाबाद मूली, सुरेन्द्रनगर, चराडवा एवं ध्रांगध्रा के संतोने मंदिर में सेवा करने की गुजारिश की थी अंत में सभी सभाजन को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था।

लीमडी तपोवन मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से रामनवमी का उत्सव धूमधाम से सम्पन्न किया.गया था। साधु भक्तवस्तल आदि संत मंडल ने कथावार्ता का लाभ दिया था। - *को. माणेकलाल*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

स्ट्रेधाम (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्राकट्योत्सव सम्पन्न किया गया था

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मंदिर के पुजारी श्री केशु भगत (बापुनगर वाला) की प्रेरणा से ता. १८-४-०५ के दिन रामनवमी-हरिजयंती महोत्सव खूब धूमधाम से संपन्न किया गया। दोपहर में १२ बजे पूर्ण पुरुषोत्तम इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की आरती की गयी थी। आरती के बाद अन्नकूट का भोग लगाया गया। प.भ. श्री यशभाई दवे यजमान के स्म में लाभ लिये थे। छोटे-बड़े सभी हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ लिया था। - *अजयभाई पटेल, गोरधनभाई वी. सीतापरा*

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर : ईस मंदिर के वयोवृद्ध संत स्वामी गोविंदप्रसाददास गुरु स्वामी गोपीवल्लभदासजी दि. १८-४-२००५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर : यहाँ के संत शा.स्वा. रामचरणदासजी गुरु स्वामी रामस्वस्मदासजी दि. १३-२-२००५ को श्रीहरि का चिंतन करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

मुंबई (मुलुन्ड) : प.भ. देवजीभाई नारायणजी तथा श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

बल्लेल (भाल) : प.भ. जीवाभाई वजाभाई चावडा की धर्म पत्नी गं.स्व. जीवीबा दि. २-४-२००५ को सर्वोपरि भगवान का अखंड चिंतन करते हुए अक्षरनिवासी हुई है।



कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में मास्तियज्ञ की पूर्णाहुति करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ अहमदाबाद-कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी ।



कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में मास्तियज्ञ प्रसंग प आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर मे पाटोत्सव प्रसंग पर यजमान परिवार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद ले रहे हैं ।



कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पंक्ति में संतो को भोजन परोसते हुए तथा दिव्य लाभ देते हुए ।

कोठंबा (पंचमहाल) मंदिर में हरिभक्तगण प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करते हुए ।

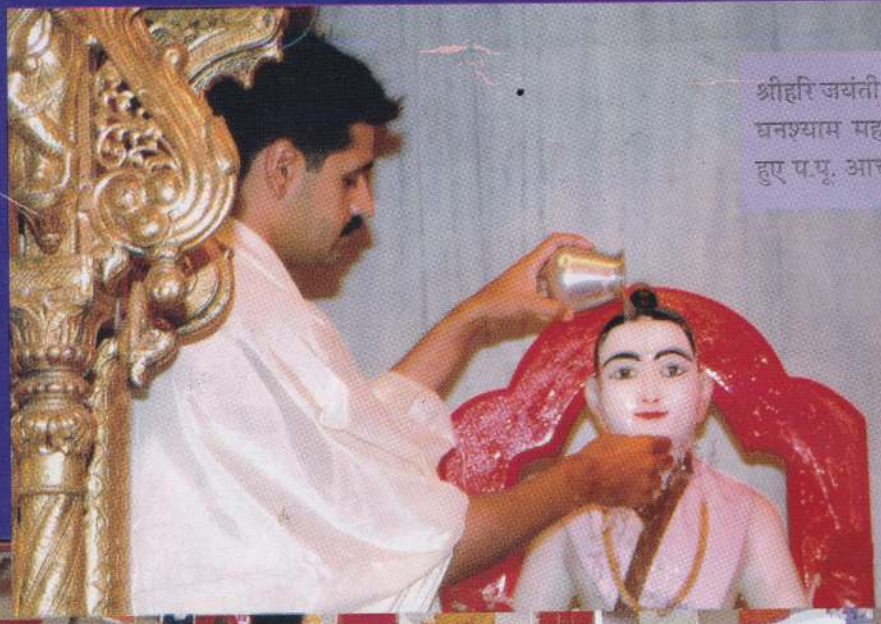




कोठंबा (पंचमहाल) मंदिर में विष्णुयाग की पूर्णाहुति करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



कोठंबा (पंचमहाल) मंदिर में दशाब्दिमहोत्सव प्रसंग पर श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



श्रीहरि जयंती - रामनवमी के उत्सव पर बाल स्वरूप घनश्याम महाराजका शोडषोपचार अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्रीहरि जयंती - रामनवमी के उत्सव पर सभा मे स्कीम कमिटी के सभ्यश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री की समूह आरती उतारते हुए ।





Rafiul